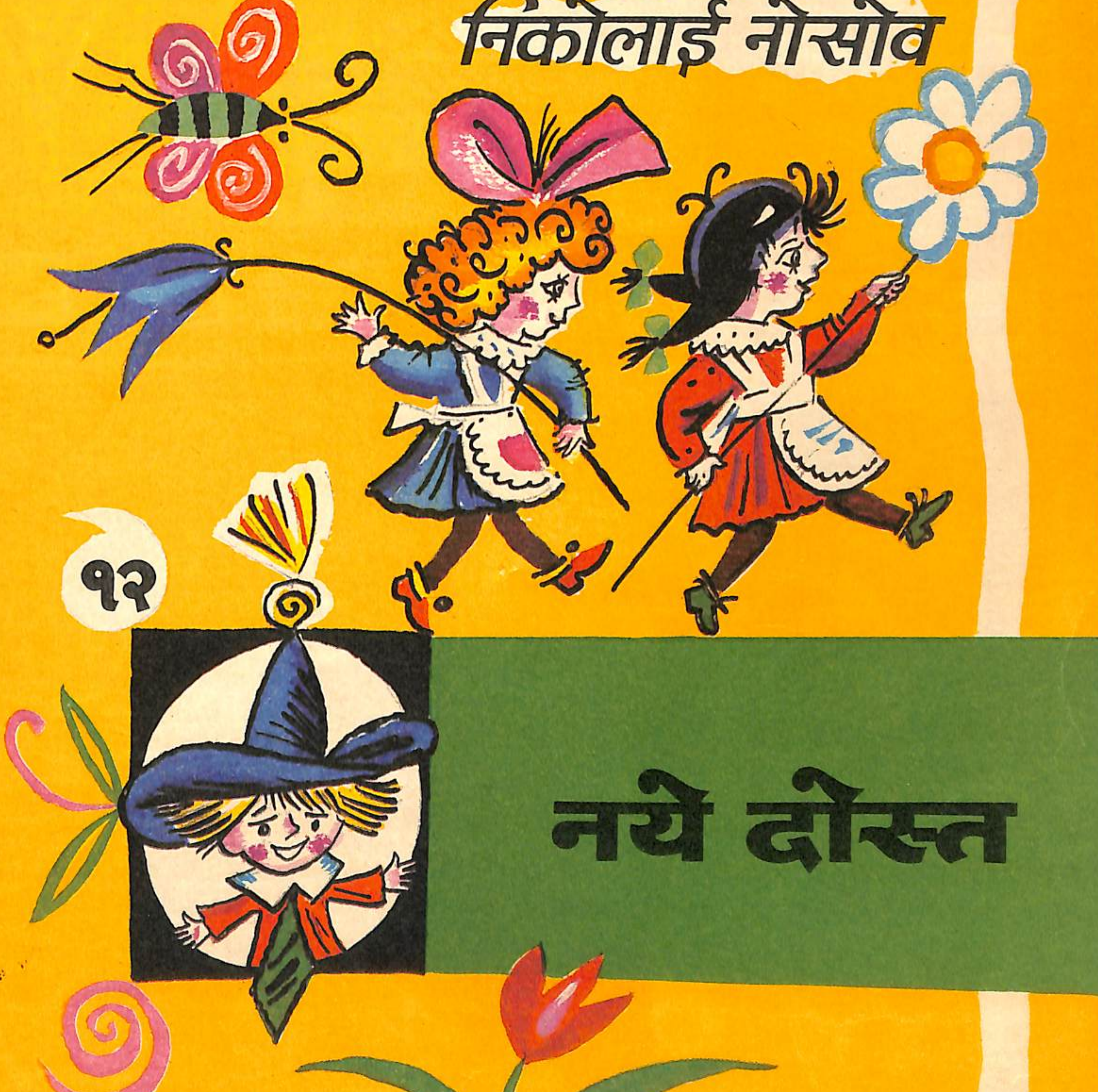
नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



१२

नये दोस्त

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

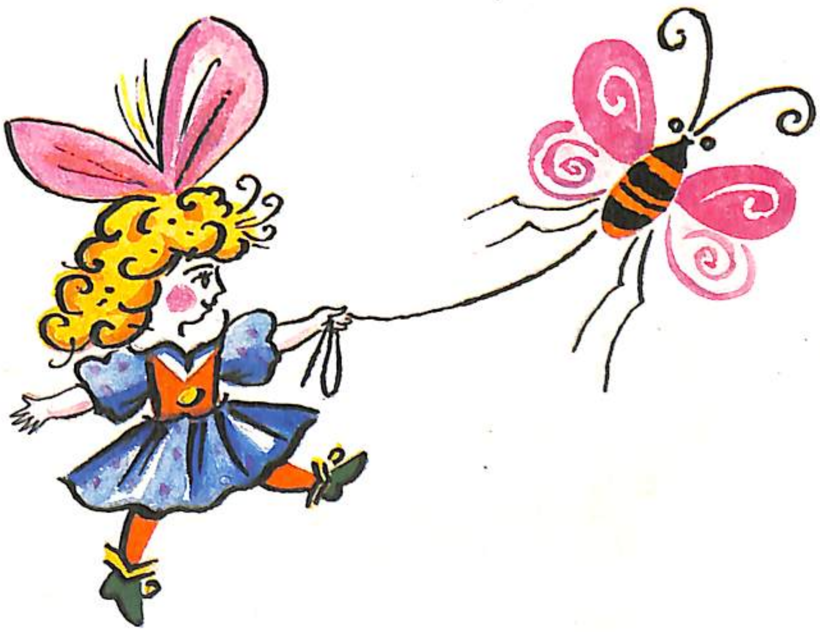
निकोलाई नोसोव

१२

नये दोस्त

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

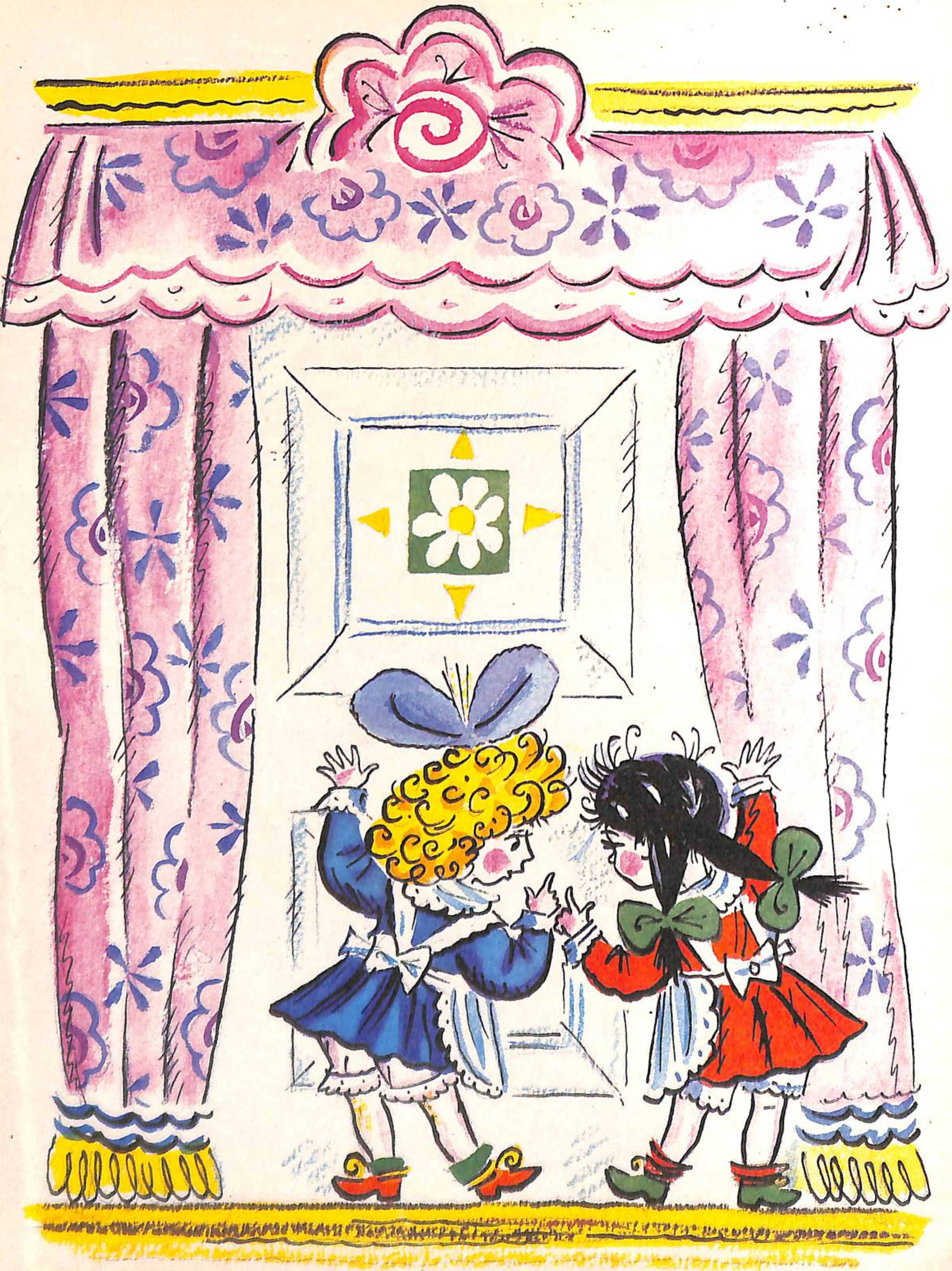
चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन

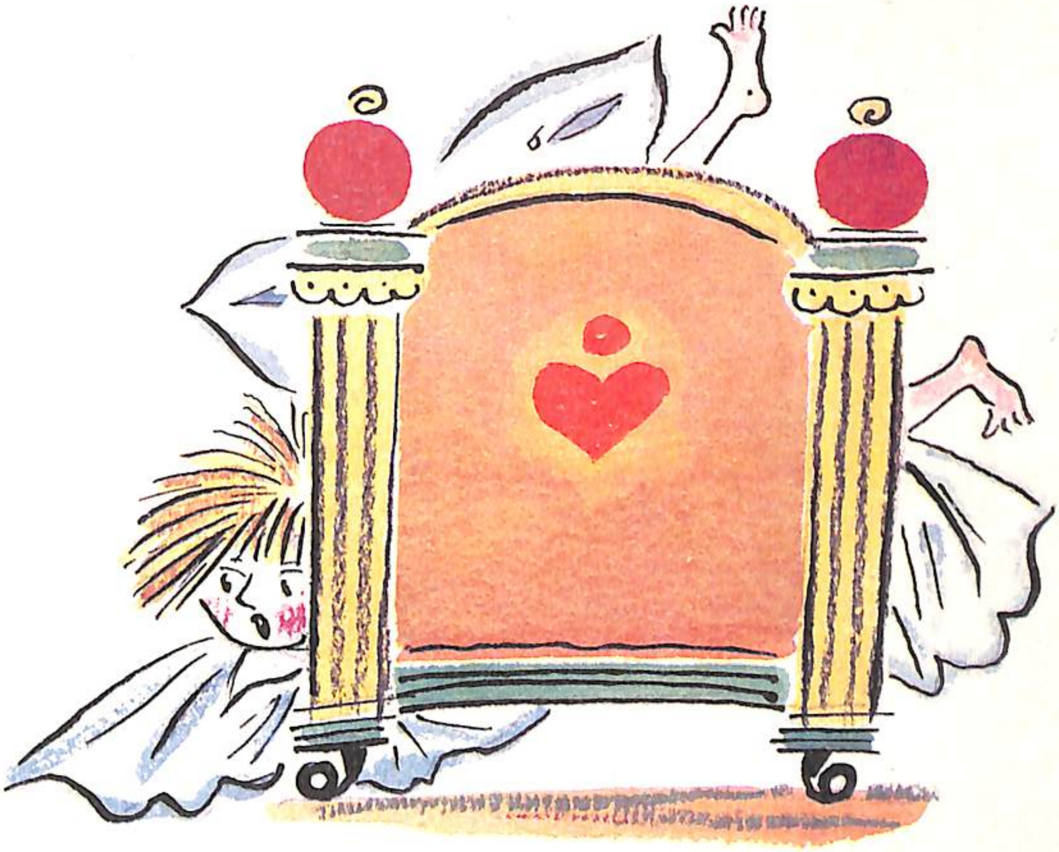


रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





नीलाक्षी के जाने के बाद नजानू थोड़ी देर बिस्तर पर लेटा रहा। फिर उसे गुड़िया का ख़्याल आया। आख़िर किस चीज़ की बनी है यह गुड़िया? अभी वह उठने ही वाला था कि उसे दरवाज़े के पीछे पैरों की आहट लगी। कुछ फुसफुसाती आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं:

"कहां है वह?"

"अन्दर।"

"क्या कर रहा है?"

"बिस्तर पर लेटा है।"

"मर गया?"

"नहीं, ज़िन्दा है।"

"मुझे भी देखने दो।"

"अभी ठहरो।"

नजानू ने दरवाज़े की तरफ़ मुड़कर देखा, लगा कोई उसे छिपकर देख रहा है।

"मुझे भी तो देखने दे। लोभी कहीं की!" फिर कोई फुसफुसाया।

"तुमने मुझे लोभी कहा। तुम्हारी–ये हिम्मत! जाओ नहीं हटती!"

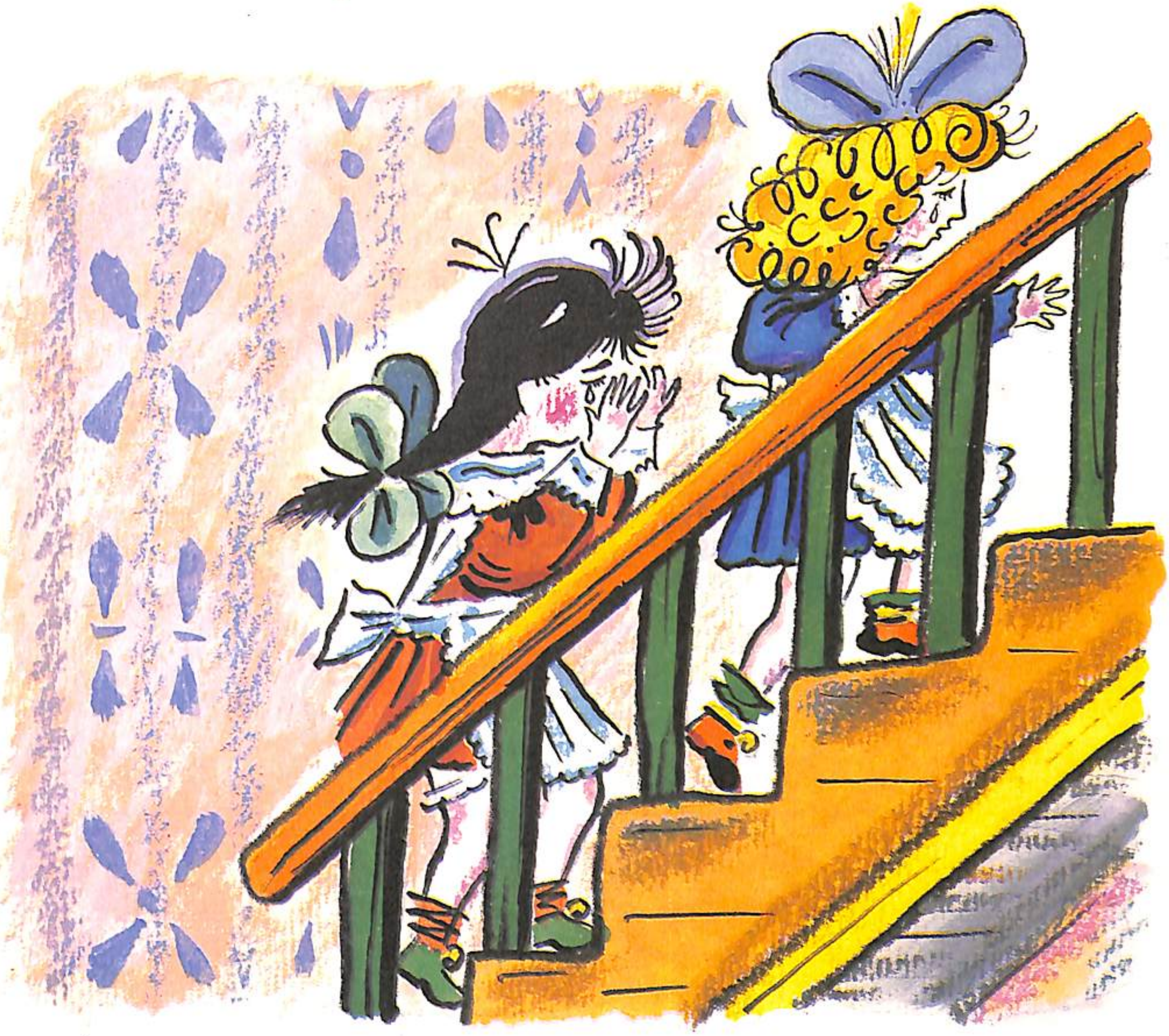
इस बार झगड़ने की आवाज़ सुनाई दी।

"देखो, धक्का न दो," एक ने गुस्से से कहा। "तुमने एक और धक्का दिया तो चोटियां नोच लूंगी!"

"तो क्या मैं तुम्हें छोड़ दूंगी। ऐसी दुलत्तियां झाड़ूंगी कि होश उड़ जायेंगे।"

नजानू ने यह देखना चाहा कि बाहर झगड़ कौन रहा है। उसने बिस्तर से कूदकर जल्दी से दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़ा भड़ाक से किसी चीज़ से जा टकराया।

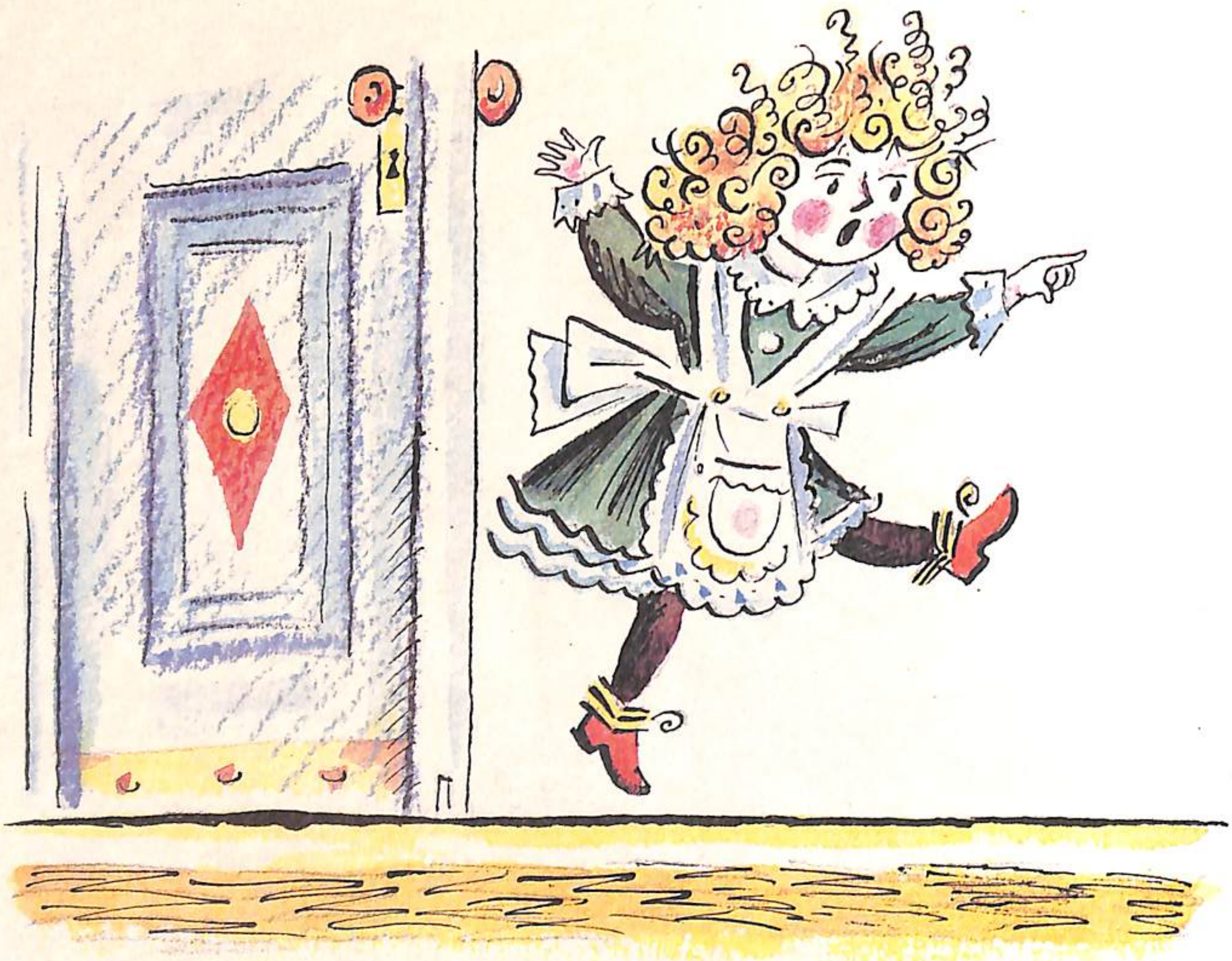




"ओह!" सिर पकड़े हुए दो छुटकियां उछलकर एक कोने में पहुंच गईं और सहमी-सहमी नजानू को देखने लगीं। वे दोनों चाबीवाली गुड़ियों की तरह जल्दी-जल्दी पलकें झपकाने और रोने लगीं। इसके बाद वे मुड़कर दरवाज़े के दाहिनी ओर संकरी सीढ़ी पर चढ़ने लगीं।

"आ-आ-आ!" नन्ही चोटियोंवाली छुटकी ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी, उसकी चोटियां इधर-उधर लहरा रही थीं।

"ऊ-ऊ-ऊ!" दूसरी भी उसी तरह रो रही थी, जिसके सिर पर आसमानी रंग का फूलदार रिबन बंधा हुआ था।



नजानू ने अपनी गुद्दी खुजला बड़बड़ाया :

"लो, हो गया न क़िस्सा! शायद उन्हें ज़ोर से चोट लगी है।"

वह डरा कि इस अपरिचित घर में कहीं और हंगामा न हो जाये, इसलिये वह बिस्तर में दुबककर झपकी लेने लगा। लेकिन दरवाज़े के पीछे क़दमों की आहट फिर सुनाई दी।

दरवाज़ा खुला और एक दूसरी छुटकी अन्दर झांकी। छोटा-सा शोख़ चेहरा, घुंघराले बाल, नुकीली नाक और शरारत भरी आंखें।

"लड़ाकू! लड़ाकू!" वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।

नजानू बिस्तर पर उचककर बैठ गया। दरवाज़ा फिर भड़ाक से बन्द हुआ और

पैरों की फटफटाहट सुनाई दी, यानी कि वह छुटकी रफ़ूचक्कर हो गई। नजानू ने कन्धे उचकाये और उपेक्षा से बड़बड़ाया :

"हाय री, शोख़ छुटकी!"

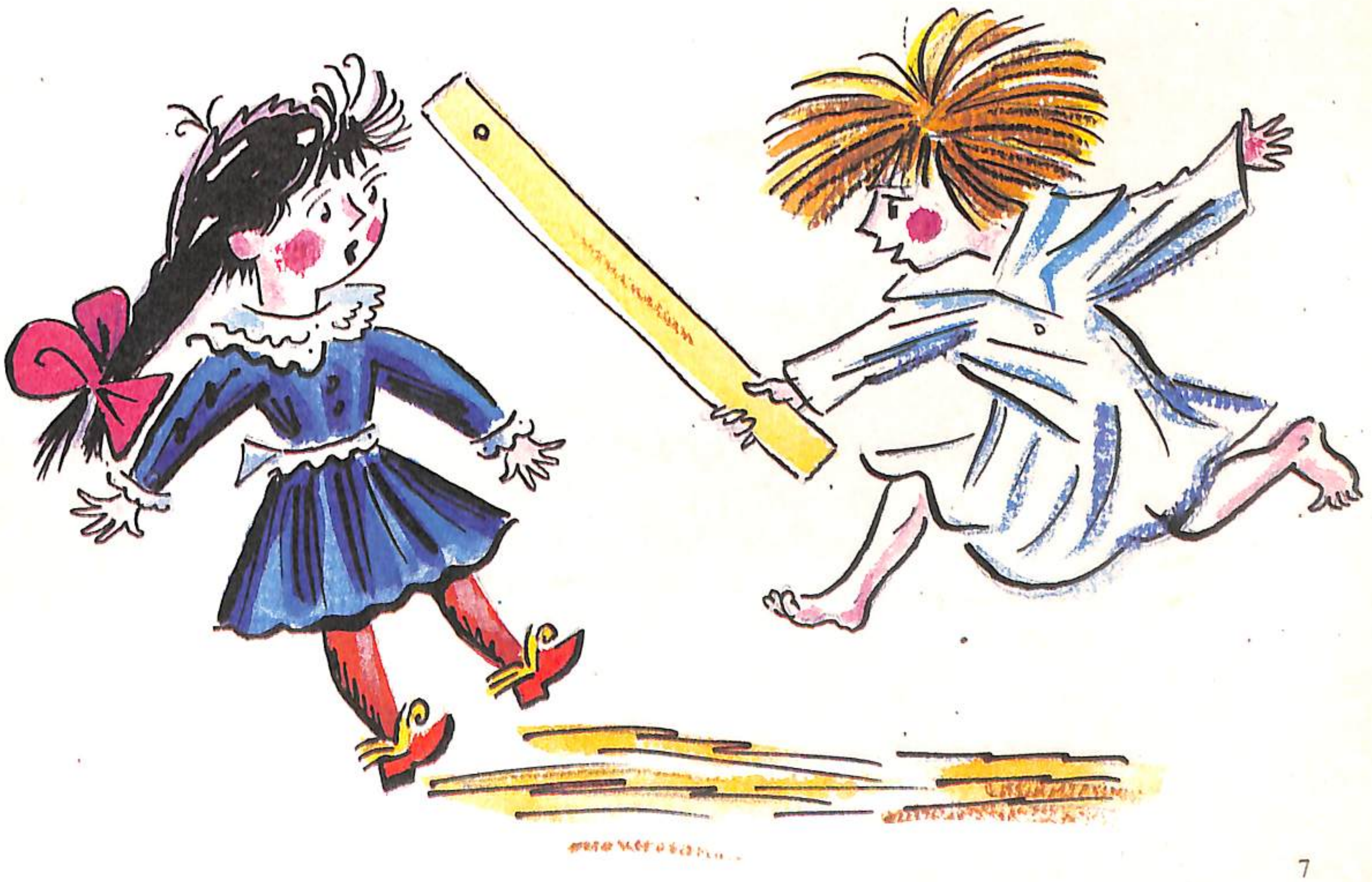
वह तकिये पर सिर टिकाए झपकियां लेने लगा कि दरवाज़ा फिर से खुल गया और कमरे में फिर से घुंघराले बालोंवाली छुटकी आ झांकी।

"लड़ाकू! लड़ाकू!" वह चिल्लाई। "हा-हा-हा!"

और दरवाज़ा फिर झट से बन्द हो गया। नजानू बिस्तर से कूदा और गलियारे की ओर लपका, लेकिन वहां कोई न था।

"ठहरो ज़रा! अभी ठीक करता हूं," नजानू ग़ुस्से से बड़बड़ाया।

उसने मेज़ पर पड़ा लकड़ी का स्केल उठाया और दरवाज़े की आड़ में छिप गया। उसे ज़्यादा इन्तज़ार न करना पड़ा। गलियारे में फिर पदचाप सुनाई दी। नजानू स्केल



ऊपर उठाए मौके की तलाश में खड़ा था। दरवाज़ा खुला और लकड़ी के स्केल ने अपना कमाल कर दिखाया। लेकिन... यह तो नीलाक्षी थी। स्केल उसके माथे से जा टकराया।

"उफ़!"

नीलाक्षी ने अपना माथा पकड़ लिया।

"आपने मुझे स्केल से क्यों मारा?" वह ज़ोर से चिल्लाई। "मेरे माथे पर गुमटा निकल आयेगा।"

"शायद कुछ नहीं होगा," नजानू ने सकुचाते और स्केल घुमाते हुए कहा।

"नहीं, नहीं! शायद आप नहीं जानते कि मैं कितनी नाज़ुक हूं। भाई, मैं तो चिड़िया के पंख से भी ज़ख़्मी हो जाती हूं, जिस्म नीला पड़ जाता है।"

"तो लाइये, मैं आपके माथे पर प्लास्टर चिपका दूं!" नजानू ने कहा। "दवा की दुकान से आप प्लास्टर लाई हैं न?"

"मैं आपके लिये लाई हूं।"

"हम दोनों के लिये काफ़ी होगा," नजानू ने जवाब दिया।

उसने कैंची उठाई और प्लास्टर के चार टुकड़े कर डाले।

"जल्दी!" नीलाक्षी ने कहा। "यहां, इस जगह!"

उसने माथा झुकाते हुए उंगली से इशारा किया। लेकिन नजानू ने चोट पर प्लास्टर तिरछा चिपकाया, उसे उचाड़ना पड़ा।

"संभालकर उचाड़िये न," नीलाक्षी चिल्लाई। "भाई, बाज आई इस मुए प्लास्टर से! ऐसे तो सारा माथा ही मैला हो जायेगा।"

"तो लीजिये न, ठीक हो गया," प्लास्टर चिपकाकर नजानू ने कहा।

नीलाक्षी आईने की ओर लपकी।

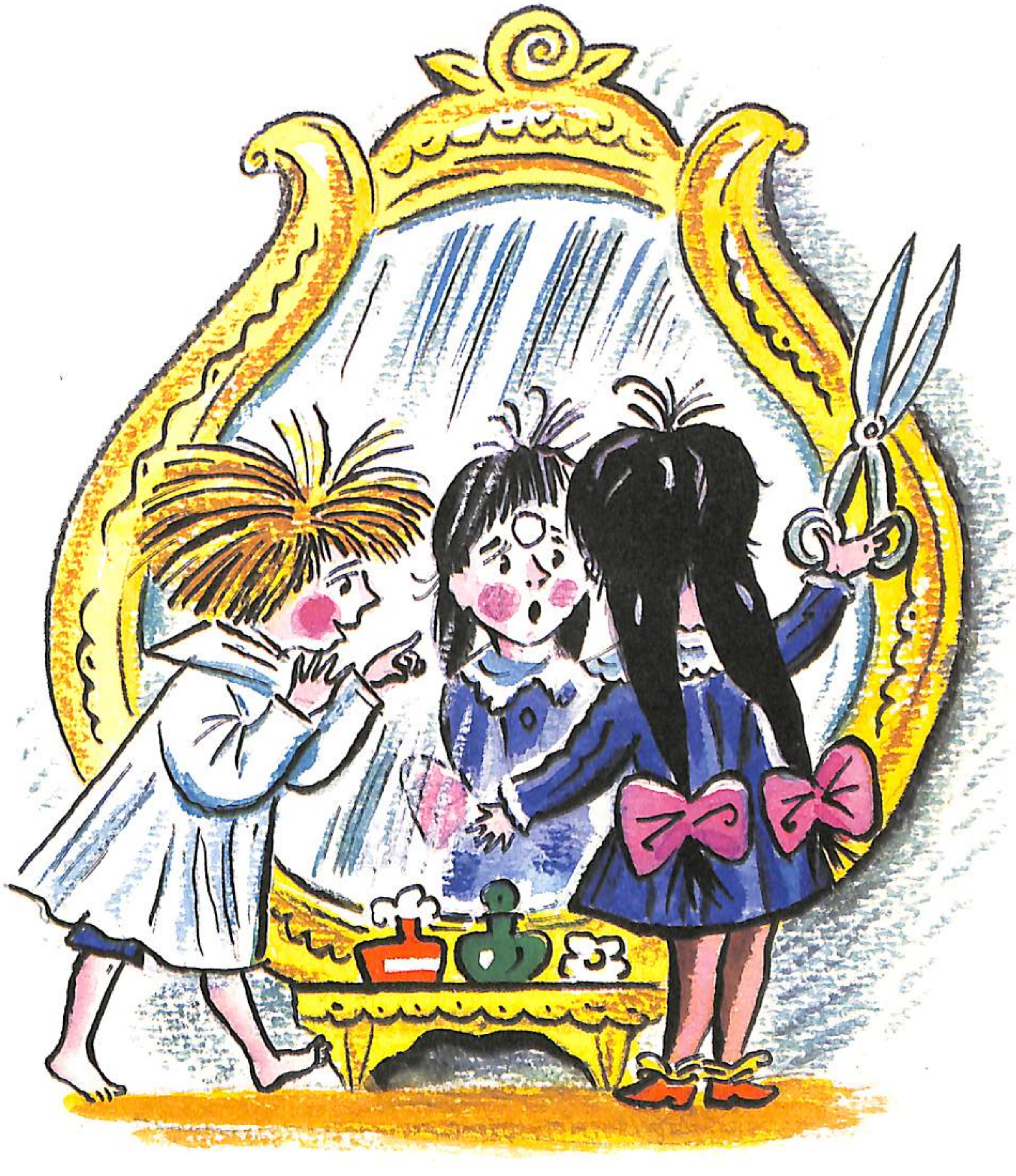
"क्या ख़ूब! यह तो बढ़िया चीज़ है न? इसे देखकर कोई क्या कहेगा? अच्छा, अब अपना कन्धा दिखाओ। तुम्हें कहां चोट लगी है?"

नीलाक्षी नजानू के कन्धे पर प्लास्टर चिपकाने लगी।

"माफ़ कीजियेगा, दरअसल मैं आपको चोट नहीं पहुंचाना चाहता था।"

"तब किसे?"

नजानू ने घुंघराले बालोंवाली छुटकी के बारे में बताना चाहा। लेकिन उसे शंका थी कि कहीं यह कोरी गप्प न मान ली जाये।



"अजी, किसी को नहीं!" नजानू ने कहा। "सच कहूं, मैं इसे आज़माना चाहता था। मारकर देखना चाहता था, यह स्केल मज़बूत है या नहीं?"

"आप सभी छुटके एक जैसे होते हैं। सिर्फ़ टकराने या टीप मारने की सोचते हैं।

पर जब आपकी ख़बर ली जाती है, तो बड़ा बुरा लगता है। आप मुस्करा क्यों रहे हैं? तो आपको मज़ा आ रहा है कि मेरे माथे पर प्लास्टर चिपका है न?"

वह फिर आईने के सामने आकर खड़ी हो गई।

"अजी, इसे तो देखकर बड़ी हंसी आती है, चिपका है माथे पर एक चौकोर टुकड़ा!"

"तो आप इसे गोल काटकर चिपका लीजिये," नजानू ने सलाह दी।

नीलाक्षी ने प्लास्टर उचाड़ा, उसे कैंची से काटकर गोल बनाया और फिर माथे पर चिपका लिया।

"अब ठीक है न?" उसने नजानू की ओर मुड़कर पूछा।

"बहुत ख़ूब, आप पर तो यह फब रहा है," नजानू ने पुष्टि की।

नीलाक्षी ने आंखें दबाकर आईने में देखा।

"अब मेरी पतलून-क़मीज़ तो वापस कर दीजिये न," नजानू ने कहा।

"चलिये, हाथ-मुंह धो लीजिये, कपड़े तो उसके बाद ही मिलेंगे।"

नीलाक्षी ने नजानू को ग़ुसलख़ाने तक पहुंचाया। दीवार पर टंगे तौलिये, मंजन, ब्रश और साबुन दिखाकर समझाया।



"तो यह रहा ब्रश और मंजन। चलिये, झट से दांत साफ़ कीजिये," नीलाक्षी ने कहा।

"मैं मंजन नहीं करूंगा!" नजानू बड़बड़ाया।

"क्यों?"

"कड़वा है!"

"भाई, यह कोई नाश्ता तो नहीं, मंजन है।"

"कुछ भी हो। इससे जीभ जल जाती है।"

"थोड़ी देर के लिए न।"

नजानू ने ब्रश लिया और बेमन से मंजन करने लगा। एक-दो बार ब्रश रगड़ने के बाद उसने मंजन थूक दिया और बुरा-सा मुंह बनाया। फिर उसने मुंह पानी से धोकर साबुन से हाथ साफ़ किये और साबुन शेल्फ़ पर रखकर वह चेहरे पर पानी के छींटे मारने लगा।

"ऐसे नहीं, साबुन से," नीलाक्षी ने कहा।

"भड़ में जाये साबुन!" नजानू ने कहा। "वह तो आंख में लगता है।"





"सोच लो," नीलाक्षी ने ज़रा सख़्ती से कहा। "यूं तो आपके कपड़े नहीं मिलेंगे।"

आख़िर नजानू करता तो क्या? उसने चेहरे पर साबुन लगाया और झटपट उसे पानी से धोने लगा।

"बाप रे बाप! कित्ता ठंडा पानी है!" वह कांपते हुए बोला।

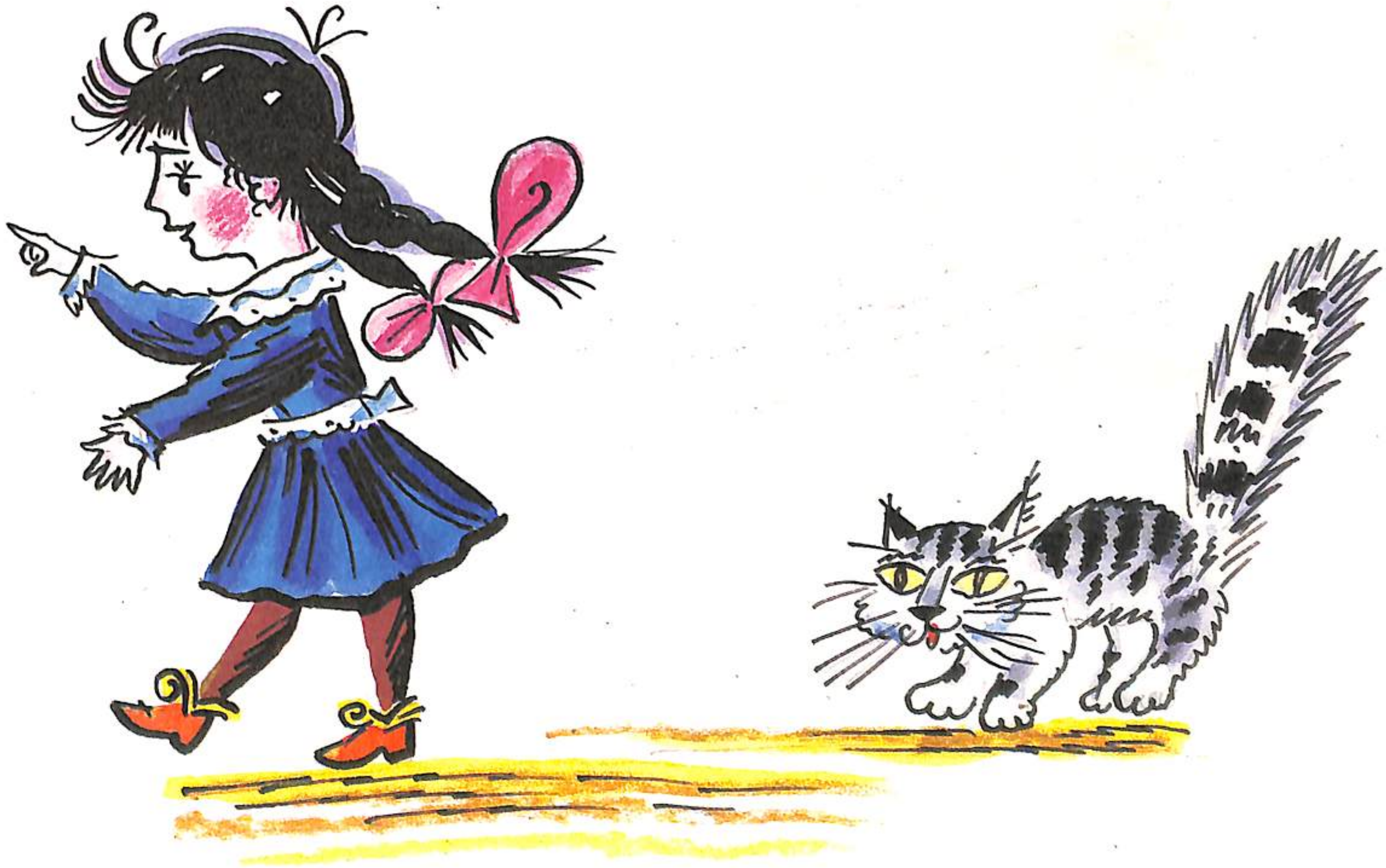
नजानू ने किसी न किसी तरह ठंडे पानी से चेहरा धो ही डाला और उसने आंखें खोले बिना अपनी बांहें फैलाकर दीवार पर कुछ टटोलने लगा।

नीलाक्षी ने अपनी हंसी को रोकते हुए नजानू की ओर देखा।

"आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?"

"त-तौलिया," ठंड से कंपकंपाते हुए नजानू ने कहा।

"आप आंखें मूंदकर तौलिया ढूंढ़ते हैं? अरे, आंखें तो खोलिये न।"



"किसलिये? यूं ही आंखों में साबुन लग रहा है।"
"आप उसे ठीक से धो लें।"



नीलाक्षी ने दीवार पर टंगे तौलिये को उठाया और नजानू की ओर बढ़ा दिया। नजानू ने अच्छी तरह चेहरा पोंछने के बाद ही अपनी आंखें खोलीं।

"यह हुई न बात! हो गये साफ़-सुथरे और सुंदर!" नीलाक्षी ने तौलिये पर जमी मैल को देखते हुए कहा: "हां, एक बात और! इस बार मैंने आपके साथ रियायत की है, अगली बार सफ़ाई का ज़रा ज़्यादा ख़्याल रखना पड़ेगा। समझ गये न?"

और तब उसने नजानू के कपड़े लाकर दिये।

"कपड़े पहनकर ऊपर आओ। नाश्ता तैयार है। भूख तो लगी है न?"

"अजी, पेट में चूहे कूद रहे हैं," नजानू ने कहा। "मैं इस समय एक समूचा हाथी खा जाऊंगा!"

"हाय री भूख! तब फिर देर क्या है? जल्दी आओ! आपका इन्तज़ार है।"



Н. Носов
НОВЫЕ ЗНАКОМЫЕ
На хинди

N. Nosov
NEW FRIENDS
In Hindi



Перевод сделан по книге:
Н. Носов. Приключения Незнайки и его друзей. М. „Дет. лит.“ 1958 г.
Для дошкольного возраста.





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इस पुस्तक में पढ़ सकते हैं:

मेज़ पर गपशप

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002109-X